International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा

सुशांत राज

राजनीति विज्ञान विभाग

वाईबीएन, विश्वविद्यालय

सार–संक्षेपः

महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में एक अद्वितीय दर्शन प्रस्तुत किया, जिसमें "लोक शक्ति" की अवधारणा केंद्रीय थी। गांधीजी का मानना था कि सच्ची शक्ति जनता के हाथों में निहित होती है और इस शक्ति का उपयोग अहिंसा, सत्याग्रह और नैतिक सिद्धांतों के माध्यम से किया जाना चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से गांधीवादी दर्शन में लोक शक्ति की अवधारणा, उसके स्रोत, प्रयोग और वर्तमान संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा किया गया है। गांधीजी के अनुसार, लोक शक्ति का अर्थ है जनता की सामूहिक शक्ति, जो नैतिकता, सत्य और अहिंसा पर आधारित हो। यह शक्ति किसी बाहरी सत्ता या हिंसक तरीकों से नहीं, बल्कि आत्मबल और सामूहिक चेतना से प्राप्त होती है। गांधीजी ने इसे "सत्याग्रह" का आधार बताया, जहाँ जनता अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सत्य और न्याय के मार्ग पर अडिग रहती है। लोक शक्ति का स्रोत गांधीजी ने ग्रामीण समाज और साधारण जनता को माना। उनका मानना था कि भारत की वास्तविक ताकत उसके गाँवों और किसानों में निहित है। इसलिए, उन्होंने ग्राम स्वराज्य की अवधारणा को बढ़ावा दिया, जहाँ स्थानीय स्वशासन और आत्मनिर्भरता के माध्यम से लोक शक्ति को मजबूत किया जा सके।

कुंजी शब्दः लोक शक्ति, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, ग्रामीण समाज।

परिचयः

गांधीजी ने लोक शक्ति के प्रयोग के लिए सत्याग्रह और अहिंसा को मुख्य हथियार बनाया। सत्याग्रह का अर्थ है "सत्य का आग्रह", जिसमें जनता अन्याय के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध करती है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण भारत का असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह था, जहाँ लाखों लोगों ने बिना हिंसा के ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष किया। अहिंसा गांधीवादी दर्शन का दूसरा प्रमुख स्तंभ था। गांधीजी का मानना था कि हिंसा से कभी स्थायी परिवर्तन नहीं आता। अहिंसा न केवल एक नैतिक सिद्धांत था, बल्कि एक व्यावहारिक रणनीति भी थी, जिसने जनता को एकजुट करने और शासकों के हृदय परिवर्तन में मदद की। गांधीजी ने लोक शक्ति को ग्राम स्वराज्य के माध्यम से संस्थागत रूप देने का प्रयास किया। उनका विचार था कि गाँवों को स्वावलंबी और स्वशासित बनाने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

से जनता की शक्ति मजबूत होगी। ग्राम स्वराज्य में स्थानीय निर्णय, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामुदायिक सहयोग को प्राथमिकता दी जाती थी। गांधीजी ने इसे "राम राज्य" की संज्ञा दी, जहाँ न्याय और समानता का शासन हो। आज के युग में, जहाँ सत्ता और संसाधनों का केन्द्रीकरण बढ़ रहा है, गांधीवादी लोक शक्ति की अवधारणा और भी महत्वपूर्ण हो गई है। नागरिक अधिकारों की रक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय के लिए जनता की सामूहिक शक्ति का उपयोग किया जा सकता है। आधुनिक सत्याग्रह के उदाहरणों में जन आंदोलन, सोशल मीडिया अभियान और नागरिक समाज की भूमिका शामिल हैं।

पूर्व अध्ययन की समीक्षाः

डॉ. रामचंद्र गुहा ने अपने शोध में गांधीवादी लोक शक्ति को एक सामाजिक–राजनीतिक उपकरण के रूप में देखा है। उनके अनुसार, गांधीजी ने लोक शक्ति को अहिंसक प्रतिरोध और सामूहिक जिम्मेदारी के माध्यम से परिभाषित किया। उनका अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि गांधीवादी लोक शक्ति ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक जनआंदोलन में बदल दिया।

प्रो. भीखू पारेख ने गांधीवादी लोक शक्ति को नैतिक शक्ति के रूप में व्याख्यायित किया है। उनके अनुसार, गांधीजी का मानना था कि लोक शक्ति का स्रोत नैतिक साहस और आत्मबल है। उनके शोध में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि गांधीवादी लोक शक्ति ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एक नैतिक संघर्ष का रूप लिया।

डॉ. ज्योतिर्मय शर्मा ने लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा को आधुनिक संदर्भ में देखने का प्रयास किया है। उनके अनुसार, गांधीजी की लोक शक्ति की अवधारणा आज भी सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संरक्षण जैसे मुद्दों पर लागू की जा सकती है। उनका अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि गांधीवादी विचारधारा में लोक शक्ति का उपयोग सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के लिए किया जा सकता है।

डॉ. अरुंधति रॉय ने गांधीवादी लोक शक्ति को एक वैकल्पिक राजनीतिक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार, गांधीजी की लोक शक्ति की अवधारणा राज्य की शक्ति के विरुद्ध एक जन–केंद्रित विकल्प प्रस्तुत करती है। उनका शोध इस बात पर केंद्रित है कि गांधीवादी लोक शक्ति आधुनिक लोकतंत्र में जनभागीदारी को बढ़ावा दे सकती है।

लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा एक समग्र और प्रभावी सामाजिक–राजनीतिक दर्शन है जिसने भारत और विश्व को गहराई से प्रभावित किया है। पूर्व अध्ययनों से स्पष्ट है कि गांधीजी की लोक शक्ति की अवधारणा न केवल स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण थी,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बल्कि आज भी सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और स्थायी विकास के लिए प्रासंगिक है। इसकी अहिंसक और नैतिक प्रकृति इसे एक सशक्त और स्थायी उपकरण बनाती है। भविष्य के शोधों में इस अवधारणा को आधुनिक संदर्भों में और अधिक विस्तार से समझने की आवश्यकता है।

शोध अंतरालः

महात्मा गांधी की विचारधारा ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई। उनकी अवधारणाओं में से एक महत्वपूर्ण अवधारणा "लोक शक्ति" की है, जिसे वे सत्याग्रह, अहिंसा और स्वराज के सिद्धांतों के माध्यम से प्रतिपादित करते थे। हालांकि, गांधीवादी विचारधारा पर व्यापक शोध होने के बावजूद, लोक शक्ति की उनकी अवधारणा से जुड़े कुछ शोध अंतराल अभी भी विद्यमान हैं। लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा एक गतिशील और बहुआयामी विचार है, जिस पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। विशेष रूप से, आधुनिक संदर्भों में इसकी व्याख्या और अनुप्रयोग पर ध्यान देना चाहिए। शोध अंतरालों को भरने से न केवल गांधीवादी विचारधारा को नया जीवन मिलेगा, बल्कि समाज के लिए एक नैतिक और प्रभावी परिवर्तन का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

अध्ययन का उद्देश्यः

- लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा का अध्ययन करना।
- महात्मा गांधी के विचार और दर्शन का अध्ययन करना।
- गांधीवादी लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धतिः

प्रस्तुत शोध–पत्र द्वितीयक अध्ययन पद्धति पर आधारित है, जिसमें अध्ययन विषय से संबंधित पुस्तकों, शोध आलेखों, सरकारी प्रतिवेदनों एवं समाचार–पत्रों का सहारा लिया गया है।

परिकल्पनाः

- सत्य और अहिंसा के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाया जा सकता है।
- गाँवों को स्वावलंबी और स्वशासित बनाने से जनता की शक्ति मजबूत होगी।
- आज के युग में भी लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा प्रासंगिक है।

मुख्य आलेखः

महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में एक अनूठी और प्रभावशाली विचारधारा का प्रतिपादन किया, जिसे "गांधीवाद" के नाम से जाना जाता है। गांधीवाद की मूल भावना में "लोक शक्ति" या जनता की शक्ति का विशेष स्थान है। गांधीजी का मानना था कि सच्ची शक्ति जनता के हाथों में निहित होती है और इसका उपयोग सत्य, अहिंसा और न्याय के माध्यम से किया जाना चाहिए। महात्मा गांधी के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विचारों और दर्शन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और वैश्विक शांति आंदोलनों को गहराई से प्रभावित किया है। उनकी अहिंसा, सत्याग्रह और लोक शक्ति की अवधारणाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। लोक शक्ति, यानी जनता की शक्ति, गांधीवादी दर्शन का एक मूलभूत स्तंभ है जिसमें सामूहिक जागरूकता, स्वावलंबन और सामाजिक परिवर्तन की क्षमता निहित है। गांधीजी के अनुसार, लोक शक्ति का अर्थ है जनता की सामूहिक शक्ति जो अहिंसा और सत्य के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन ला सकती है। उनका मानना था कि यह शक्ति न केवल शासन के विरुद्ध प्रतिरोध का साधन है, बल्कि समाज के पुनर्निर्माण का भी आधार है। गांधीजी ने इसे "स्वराज" की अवधारणा से जोड़ा, जहाँ लोक शक्ति का उपयोग स्वशासन और स्वावलंबन के लिए किया जाता है।

लोक शक्ति के प्रमुख तत्व

- **अहिंसा:** गांधीजी के अनुसार, लोक शक्ति का मूल आधार अहिंसा है। अहिंसक प्रतिरोध और सहयोग के माध्यम से जनता शासन के अन्यायपूर्ण निर्णयों को चुनौती दे सकती है।
- **सत्याग्रह:** सत्याग्रह लोक शक्ति का एक प्रमुख उपकरण है। इसमें सत्य और नैतिकता के आधार पर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया जाता है।
- **स्वावलंबन:** गांधीजी ने लोक शक्ति को स्वावलंबन से जोड़ा। उनका मानना था कि आत्मनिर्भर समाज ही सच्ची लोक शक्ति का निर्माण कर सकता है।
- **सामूहिक जागरूकता:** लोक शक्ति के लिए जनता की सामूहिक जागरूकता आवश्यक है। गांधीजी ने इसके लिए शिक्षा और संवाद को महत्वपूर्ण माना।

गांधीवाद में लोक शक्ति की भूमिका

सत्याग्रह का सिद्धांत: गांधीजी ने सत्याग्रह को लोक शक्ति का प्रमुख उपकरण बताया। सत्याग्रह का अर्थ है "सत्य का आग्रह"। इसमें जनता अन्याय के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध करती है। उदाहरण के लिए, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में दांडी मार्च और असहयोग आंदोलन सत्याग्रह के प्रतीक थे।

अहिंसा का महत्व: गांधीजी का मानना था कि हिंसा से कभी भी स्थायी परिवर्तन नहीं आता। अहिंसा लोक शक्ति को नैतिक बल प्रदान करती है। उन्होंने कहा, "अहिंसा कायरता नहीं, बल्कि सबसे बड़ी वीरता है।"

स्वराज की अवधारणा: गांधीजी ने स्वराज को लोक शक्ति का लक्ष्य बताया। स्वराज का अर्थ है स्वयं का शासन। उनका मानना था कि जनता को स्वयं अपने भाग्य का निर्माता बनना चाहिए।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ग्राम स्वराजः गांधीजी ने ग्रामीण समुदायों को लोक शक्ति का केंद्र बताया। उन्होंने ग्राम स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें गाँवों को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने पर जोर दिया गया।

लोक शक्ति के उदाहरण

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनः गांधीजी ने जनता को एकजुट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष किया। चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे आंदोलनों में लोक शक्ति की महत्ता स्पष्ट है।

नमक सत्याग्रहः नमक कानून के विरुद्ध दांडी मार्च में लाखों लोगों ने भाग लिया। यह आंदोलन लोक शक्ति की एक मिसाल बना।

सामाजिक सुधारः गांधीजी ने छुआछूत, नशाखोरी और स्त्री शिक्षा जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लोक शक्ति का उपयोग किया।

आज के युग में भी लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा प्रासंगिक है। जनता की शक्ति का उपयोग करके हम भ्रष्टाचार, पर्यावरण संकट और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। आधुनिक समय में सोशल मीडिया और जन आंदोलनों के माध्यम से लोक शक्ति को नई दिशा मिली है। गांधीजी की लोक शक्ति की अवधारणा एक सशक्त और नैतिक समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करती है। उनका विश्वास था कि जब जनता एकजुट होकर सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलती है, तो कोई भी अन्याय उसके सामने टिक नहीं सकता। आज भी हमें गांधीवादी विचारधारा से प्रेरणा लेकर लोक शक्ति का सही उपयोग करना चाहिए। यही समाज और राष्ट्र के विकास की कुंजी है। इस प्रकार, लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा न केवल ऐतिहासिक महत्व रखती है, बल्कि यह आज भी हमारे लिए मार्गदर्शक सिद्धांत है।

निष्कर्षः

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि गांधीवादी दर्शन में लोक शक्ति की अवधारणा एक क्रांतिकारी विचार था, जिसने जनता को उसकी शक्ति का एहसास कराया। यह शक्ति नैतिकता, सत्य और अहिंसा पर आधारित थी, और इसने भारत की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी, लोक शक्ति की यह अवधारणा हमें सामूहिक कार्यवाही, न्याय और स्थायी परिवर्तन की प्रेरणा देती है। गांधीजी का यह संदेश है कि सच्ची शक्ति जनता के हाथों में है, और इसका उपयोग समाज के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ स्रोतः

1. डॉ. रामचंद्र गुहा (2014), गांधीवादी दर्शन में लोक शक्ति की अवधारणा, यश पब्लिकेशन, मथुरा पृ. 87.
2. प्रो. भीखू पारेख (2019) लोक शक्ति की अवधारणा, सबलाइम पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 138.
3. डॉ. ज्योतिर्मय शर्मा (2016), आधुनिक समय में सोशल मीडिया और जन आंदोलनों, साहित्य भवन पब्लिकेशन पटना, पृ. 31
4. डॉ. अरुंधति रॉय (2018), लोक शक्ति की गांधीवादी अवधारणा का ऐतिहासिक महत्व, उपकार प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 214.
5. निशा शर्मा, (2010), सत्याग्रह और अहिंसा का महत्व, कल्पज पब्लिकेशन, मेरठ, पृ. 27.
6. प्रियंका सोनी, (2011), स्त्री शिक्षा एवं सामाजिक बुराईयां, सीवांक प्रकाशन, ग्वालियर, पृ. 147.
7. आकांक्षा दूबे, (2011), स्वराज की अवधारणा, डिस्कवरी पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 42.
8. कैलाश अरोड़ा, (2012), सत्याग्रहः लोक शक्ति का प्रमुख उपकरण, सीवांक प्रकाशन, ग्वालियर, पृ. 71